International Journal of Humanities And Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 28-03-2023, Accepted: 13-04-2023, Published: 28-04-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 74-77

वर्तमान संदर्भ में गठबंधन की राजनीति एक अवलोकन

सुषमा कुमारी
शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान विभाग, बी.आर. ए. बी.यू. मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश
वर्तमान समय में गठबंधन की सरकार भारतीय लोकतंत्र की आवश्यकता एवं नियति बन गई है।गठबंधन सरकार के समकालीन परिदृश्य को देखा जाए तो जहां कुछ वर्ष पहले केंद्र और राज्य स्तर पर त्रिशंकु और कमजोर सरकार का निर्माण हो रहा था। वही विगत वर्ष कुछ वर्षों से मजबूत गठबंधन की सरकारों का निर्माण हो रहा है।
पिछले कुछ विगत 10 वर्षों में यह देखा गया है कि भारत में गठबंधन की राजनीति जो है वह अपने चरम सीमा पर है।इसका स्पष्ट उदाहरण संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन है। आज जो भी सरकार बन रही है।वह मिली जुली सरकार ही बन रही है।फिर चाहे वह 2004 की डा.मनमोहन सिंह की नेतृत्व में बनी यूपीए गठबंधन हो उसमें भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ शिवसेना,द्रविड़ मुनेत्र कड़गम,भारतीय मुस्लिम लीग, केरल कांग्रेश आदि की मिली जुली सरकार बनी थी।राज्य स्तर पर भी देखा जाए तो जो भी इस तरह की सरकार बनती है। उसमें भी इसी प्रकार की मिली जुली सरकार को देखा गया है।किसी भी राज्य को देखा जाए तो वहां भी इसी प्रकार की ही सरकार है।उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में जो मुख्यमंत्री का चुनाव होता है उसमें भी देख सकते हैं कि किसी को भी बहुमत नहीं प्राप्त होता है और मिली जुली सरकार ही बनानी पड़ती है।
वर्तमान समय में यह समस्या देखा जा रहा है कि कोई भी राजनीतिक पार्टी अकेले अपने बदौलत बहुमत प्राप्त कर के सत्ता में नहीं आ रही है। उसे किसी भी प्रकार से अन्य पार्टियों के साथ मिलकर गठबंधन की सरकार बनानी पड़ती है।
उपयुक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गठबंधन की राजनीति में भारतीय शासन व्यवस्था को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरीकों से प्रभावित नहीं करती बल्कि गठबंधन सरकारों से राजनीतिक व्यवस्था के नए आयामों का विकास हो रहा है।समकालीन राजनीति में गठबंधन इस प्रकार से घुलमिल गया है कि गठबंधन को अलग करके भारतीय राजनीति के विषय में सोच पाना संभव नहीं है। गठबंधन की राजनीति के महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2019 के आम चुनाव में प्राप्त बहुमत के बाद भी गठबंधन को यथावत रखा है गठबंधन की राजनीति में संघवाद को मजबूत किया है और इससे क्षेत्रवाद तथा अलगाववाद के मुद्दे कमजोर पड़े हैं। अगर गठबंधन की राजनीति भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण नहीं होती तो भारतीय राजनीतिक व्यवस्था द्वारा बहुत पहले ही इससे पीछा छुड़ा लिया गया होता।

मूल शब्दः गठबंधन, भारत, वर्तमान, केन्द्र, राज्य, राजनीतिक, एन. डी.ए., यू.पी.ए

वर्तमान समय में गठबंधन की सरकार भारतीय लोकतंत्र की आवश्यकता एवं नियति बन गई है। गठबंधन सरकार के समकालीन परिदृश्य को देखा जाए तो जहां कुछ वर्ष पहले केंद्र और राज्य स्तर पर त्रिशंकु और कमजोर लोकसभा का निर्माण हो रहा था वही विगत कुछ वर्षों से मजबूत गठबंधन सरकारों का निर्माण हो रहा है जिससे सरकारों का स्वरूप व्यक्तिगत होता जा रहा है। जब कोई भी समाज संक्रमण के दौर से गुजर रहा होता है। तब ऐसी परिस्थिति अस्तित्व में आ जाती है, कि गठबंधन जरूरी बन जाता है।भारतीय समाज न केवल जाति, धर्म, भाषा, अमीर– गरीब के आधार पर विभक्त है, बल्कि वर्ग, जीवन शैली एवं व्यवसाय के आधार पर भी बटा हुआ है। यह सामाजिक, आर्थिक, संस्कृतिक वैविध्यपूर्णता चुनावी राजनीति को प्रभावित करती हुई प्रलक्षित हो रही है। भारतीय लोकतंत्र के पिछले दो दशकों के कार्यकलापों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यहां गठबंधन की राजनीति केवल ऊपरी नहीं है।बल्कि इसकी जड़ें बहुत गहरी जम चुकी है।
आजाद भारत ने अपने लिए संसदीय प्रणाली को स्वीकार किया है। गठबंधन सरकार संसदीय प्रणाली का एक लक्षण है। संसदीय सरकार में उस राजनीतिक दल को सरकार बनाने का निमंत्रण दिया जाता है। जिसे विधानसभा या लोकसभा के सदस्यों के चुनाव में बहुमत प्राप्त होता है। जब संसदीय प्रणाली में किसी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता है। तब विधानसभा अथवा लोकसभा के दो या दो से अधिक दल मिलकर सरकारका निर्माण एवं संचालन करते हैं। ऐसी सरकार को गठबंधन की सरकार कहते हैं।

अतः गठबंधन की सरकार दो या दो से अधिक सामान अथवा विपरीत विचारधाराओं वाले व्यक्तियों एवं पार्टियों का सरकार बनाने अथवा सत्ता हथियाने का गठजोड़ है। गठबंधन का अंग्रेजी शब्द कोअलिसन है जिसे लैटिन भाषा से लिया गया है जिसका मतलब है साथ चलना या साथ बढ़ना।
गठबंधन सरकार एक संसदीय प्रणाली में दो या दो से अधिक पार्टियों के गठबंधन से बनी एक सरकार हैं। डिक्शनरी ऑफ पॉलिटिकल थॉट में रोजन स्क्रटन ने गठबंधन शब्द को परिभाषित करते
हुए लिखा है कि "विभिन्न दलों या राजनीतिक पहचान रखने वाले प्रमुख व्यक्तियों का आपसी समझौता गठबंधन कहलाता है। दूसरे शब्दों में गठबंधन सरकार का निर्माण दो या दो से अधिक राजनीतिक दलों के निर्वाचित उम्मीदवारों के समूह तथा अन्य किसी राजनीतिक दलों के निर्वाचित उम्मीदवारों के समर्थन से होता है।"गठबंधन की सरकार विभिन्न राजनीतिक दलों के परस्पर सहयोग से बनती है इसमें विभिन्न मतों एवं नीतियों को मानने वाली पार्टियां एकजुट होती है। जब गठबंधन सरकार की नीतियों का निर्धारण किया जाता है तब उसमें सम्मिलित सभी राजनीतिक दलों द्वारा विचार विमर्श किया जाता है। सभी के विचारों का मिश्रण ही नीति का रूप लेती है। इस प्रकार का गठबंधन दो या दो से अधिक राजनीतिक पार्टियां चुनाव से पहले भी बनाते हैं और चुनाव के बाद भी बना सकते हैं। अतः गठबंधन सरकार का निर्माण तीन प्रकार से होता है।

1. संसदीय गठबंधन
संसदीय गठबंधन तब किया जाता है जब सरकार बनाने के लिए किसी भी एक दल के पास बहुमत नहीं होता है।

2. चुनाव पूर्व गठबंधन
चुनाव पूर्व गठबंधन जब दो या दो से अधिक राजनीतिक पार्टियां अपने वैचारिक मतभेदों को भूलकर एवं परस्पर सहयोग के आधार पर एक दूसरे के खिलाफ अपने उम्मीदवार खड़े नहीं करती है तथा मिलकर चुनाव लड़ती है। गठबंधन की पार्टियां अपनी सीटों को इस तरह से विभाजित कर लेती है कि प्रत्येक चुनाव क्षेत्र में गठबंधन का केवल एक उम्मीदवार ही खड़ा होता है। उस उम्मीदवार के पीछे गठबंधन की सभी पार्टियां मिलकर मजबूती से खड़ी रहती है ताकि प्रत्येक सीट पर गठबंधन के उम्मीदवार की ही जीत हो। इस प्रकार का गठबंधन सबसे सशक्त और मजबूत गठबंधन होता है।

3. सरकार संबंधी गठबंधन
सरकार संबंधी गठबंधन तब किया जाता है जब किसी लोकतांत्रिक देश में राष्ट्रीय आपात की स्थिति में राजनीति दल मिलकर सरकार बनाते हैं। ऐसे मामले में पार्टियां एक सर्वमान्य राष्ट्रीय उद्देश्य के लिए अपने मतभेद बुलाने हेतु कठोर प्रयास करते हैं।

गठबंधन प्रक्रिया की उत्पत्ति समाज का मूलभूत परिवर्तन का प्रमुख कारक है। भारत के संदर्भ में गठबंधन कोई नई विचारधारा नहीं है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस गठबंधन के आधार पर ही कार्य करते थे। यह विभिन्न विचारधाराओं और नीतियों को मानने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं की एक सामूहिक संस्था थी। यहां यह ध्यात्व है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व कांग्रेस कोई राजनीतिक पार्टी नहीं थी। कांग्रेस कोई भी कार्य विभिन्न विचारधाराओं को मानने वाले व्यक्तियों या संस्थाओं से विचार–विमर्श करके करती थी। कांग्रेस में समाजवादी, साम्यवादी, पूंजीवादी आदि सभी राजनीतिक विचारधाराओं को मानने वाले लोक थे परंतु उसे गठबंधन सरकार की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

वर्तमान भारतीय राजनीति में गठबंधन सरकार अपरिहार्य बन चुकी है। आगामी वर्षों में भी यह आशा की जाती है कि भारत में संघ तथा राज्यों के स्तर पर गठबंधन सरकारों का ही गठन होता रहेगा। विविधताओं से परिपूर्ण भारत देश में भौगोलिक, धार्मिक, जातीय, भाषा एवं संस्कृतिक रणनीति अलग अलग होने के कारण किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत की प्राप्ति ना होने से गठबंधन की राजनीति का प्रचलन हुआ और भारतीय राजनीति में गठबंधन की राजनीति अपरिहार्य बनती चली गई।

वर्तमान समय में गठबंधन की सरकार ही भारतीय लोकतंत्र की आवश्यकता एवं नियति बन गई है तो हमें इन सरकारों की सफलता के लिए राजनीतिक समझ, संस्कृति, आचार विचार एवं व्यवहार को अपनाना होगा। वस्तुतः भारत में गठबंधन की राजनीति के लिए दो दशक की परिस्थितियों अर्थात दलों का प्रभाव जो भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, विचार आदि पर अवलंबित है, को उत्तरदाई माना जा सकता है किंतु यह परिस्थितियां तो आजादी के पूर्व भी विद्यमान थी। तब और अब में अंतर इतना ही है कि आजादी के पूर्व धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र, विचारधारा की विभिन्नता के बाद भी महत्वपूर्ण लक्ष्य सम्मुख था – साम्राज्यवादी शक्तियों को परास्त करना द्य सत्ता प्राप्त करना प्रमुखता न होकर गौण था। सत्ता का बंटवारा भी पूर्णतः गौण था। इसलिए इन विभिन्नताओं के रहते हुए भी बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सभी ने गांधी जी के नेतृत्व को स्वीकारा और सराहा। वर्तमान समय में ऐसा लक्ष्य सम्मुख ना होने के कारण विचारधाराओं की टकराहट दृष्टिगत होती है। यहां पर किसी भी प्रकार सत्ता की प्राप्ति करना ही प्रमुख लक्ष्य हो गया है। सरकार का नेतृत्व करने वालों के प्रति सहयोगियों की निष्ठा का अभाव परिलक्षित हो रहा है। आज गठबंधन सरकार के लिए उत्पन्न परिस्थितियों को कोसने से बेहतर यह दृष्टि में रखना अधिक लाभदायक होगा की आखिर ऐसी परिस्थितियां क्यों आयी।

गठबंधन सरकारों के मध्य अविश्वास और एक दूसरे के खिलाफ विरोध के भाव प्रकट होते रहते हैं, जिससे निरंतर जोड़–तोड़ की भयावह स्थिति बनी रहती है। गठबंधन सरकारों के संबंध में यह कहा गया है कि "यह सरकार सदैव खतरनाक और और लोकप्रिय विकल्पों से बचने की कोशिश करती है और निर्णय को स्थगित करती रहती है"। इस प्रकार की सरकारें किसी भी समस्या का प्रत्यक्षतः निराकरण करने में सक्षम नहीं होते है। वे इस हेतु कोई ठोस समाधान देने में विफल होती हैद्य इसका एक मात्र कारण मूल्य आधारित राजनीति की जगह स्वार्थ–परक राजनीति होती है।

गठबंधन के घटक दलों के निजी स्वार्थ पूर्ति में उलझी राजनीतिक में नित नूतन परिवर्तन दृष्टिगत हुए हैं। जो राजनीतिक दल चुनाव बाद सरकार बनाने हेतु गठबंधन करते थे, वह चुनाव पूर्व भी गठबंधन बनाकर चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव पूर्व व बाद में बनते बिगड़ते गठबंधन राष्ट्रीय राजनीति का अहित कर रहे हैं। इनके पास ना तो स्पष्ट राष्ट्रीय दृष्टि है, ना ही कोई ठोस राष्ट्रीय कार्यक्रम। चुनाव में अनावश्यक पूंजी का प्रदर्शन, झूठी महत्वकांक्षा, जातीय व संप्रदायिक गोलबंदी गठबंधन की राजनीति की नियति बनती जा रही है। गठबंधन की आड़ में जहां एक तरफ जातिवादी, संप्रदायिक शक्तियां देश में प्रबल स्वरूप धारण करती जा रही है वहीं दूसरी तरफ देश में साम्राज्यवादी, बहुराष्ट्रीय, पूंजीवादी ताकतें अपनी जड़ों को जमाती जा रही है। नीतिगत रूप से देश में जितने भी गठबंधनों का गठन–पतन हो रहा है, सब में किंचित समानता परिलक्षित हो रही है, अंतर सिर्फ मुखौटे का है।

भारत में गठबंधन राजनीति की भुमिका
सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि दि दलीय व्यवस्था में एक दलीय सरकारों का गठन होता है जबकि बहुदलीय व्यवस्था में किसी भी राजनीतिक दलों को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने के कारण गठबंधन सरकारों का गठन होता है। जहां तक भारत में गठबंधन सरकारों की गठन की बात है तो यहां सबसे पहले गठबंधन सरकार स्वतंत्रता के ठीक बाद 1967 में बनी थी, जब सत्ता का हस्तांतरण हुआ था और देश में अंतरिम सरकार गठित हुई थी। उसके बाद देश में हुई चुनावी राजनीति में विभिन्न दलों की भागीदारी कहीं पीछे छूट गई और चाहे संसदीय चुनाव हो या विधानसभा चुनाव हर जगह कांग्रेस अपने बल पर सरकार बनायी। 1971 से 76 के वर्षों में और पुनः 1980 से 88 के काल में केंद्र तथा अधिकांश राज्यों में कांग्रेस की प्रधानता का युग रहा जहां गठबंधन राजनीति की कोई संभावना नहीं थी।

परंतु 1960 के दशक के उत्तरार्ध में कांग्रेस के विरुद्ध बगावत के स्वर उभरने लगे जिसके फल स्वरुप 1967 में कई राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारें बनी जो गठबंधन सरकार थी। 1962 में चीन के हाथों भारत की पराजय, निरंतर बढ़ती हुई महंगाई, नेहरू के बाद कांग्रेस में करिश्माई नेतृत्व का अभाव एवं डा. राम मनोहर लोहिया के गैर कांग्रेसवाद की नीति के कारण कांग्रेस पार्टी केंद्र में कमजोर होती चली गई परिणामस्वरूप 1967–70 के काल में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार, केरल और पंजाब में गठबंधन सरकारों का गठन हुआ। यह वह काल था जब कांग्रेस के प्रभुत्व का अवसान हुआ तथा राज्यों की राजनीति में गठबंधन सरकारों के नवीन युग का श्रीगणेश हुआ।

केंद्रस्तर पर चुनावी राजनीतिक प्रयोगशाला में गठबंधन का सर्वप्रथम प्रयोग मोरारजी देसाई के नेतृत्व में 1977 में बनी जो राजनीतिक महत्वाकांक्षा की भेंट चढ़ गया जिससे यह स्पष्ट कर दिया कि अगर भारतीय राजनीति में किसी एक दल की प्रभुता का अस्तित्व नहीं बना सकता। 1989 का वह वर्ष भारतीय राजनीति के लिए एक युगांतकारी वर्ष रहा है। जिसे वास्तविक रूप में केंद्र में गठबंधन की राजनीति का श्रीगणेश माना जा सकता है। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में दिसंबर 1989 में भाजपा तथा वामदलों के बाहर समर्थित समर्थन से राष्ट्रीय मोर्चा के रूप में जो सरकार बनी, वह 1990 में भाजपा द्वारा समर्थन वापस लेने से समाप्त हुई। नवंबर 1990 में श्री चंद्रशेखर के नेतृत्व में कांग्रेस समर्थित गठबंधन सरकार सत्तारूढ़ हुई, जो 21 जून 1991 तक रही। वर्ष 1991 में ही श्री पी.वी. नरसिम्हा राव के नेतृत्व में कांग्रेस की स्थाई सरकार बनी जिसने अपना कार्यकाल पूर्ण किया। मई 1996 के आम चुनाव में पुनः किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होने से भाजपा ने अपने सहयोगियों संग सरकार गठन का दावा पेश किया और अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में गठबंधन सरकार का गठन हुआ, जिसका लोकसभा में अपना बहुमत सिद्ध न कर पाने से 13 दिनों में ही अंत हो गया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के पतन के बाद जून 1996 में देवगौरा के नेतृत्व में कांग्रेस समर्थित सरकार सत्तारूढ़ हुई, जो कांग्रेस के हठधर्मिता के कारण मात्र 10 माह बाद ही इसका अंत हो गया। अप्रैल 1997 में इंद्र कुमार गुजराल के नेतृत्व में कांग्रेसी एवं मार्क्सवादी दल समर्थित सरकार बनी, जिसका शीघ्र ही अंत हो गया। 12 वीं लोकसभा आम चुनाव 1998 बहुत महत्वपूर्ण है, जो त्रिशंकु संसद व खंडित जनादेश के रूप में अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में सरकार बनी जिसका अपने ही सहयोगी दल की हठधर्मिता के कारण अंत हो गया।

लोकसभा आम चुनाव 1998 के आम चुनाव में लगभग अंतविरोधयुक्त गठबंधन सरकारें बनी स जो अल्पआयु रही, किंतु तेरहवीं लोकसभा आम चुनाव 1999 में भी किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होने से चुनाव पूर्व भाजपा व सहयोगी दलों ने 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' का निर्माण कर प्रथम बार चुनाव पूर्व न्यूनतम साझा कार्यक्रम आधारित गठबंधन कर अटल बिहारी वाजपेई जी के नेतृत्व में पुनः जो सरकार सत्तारूढ़ हुई, इसने अपना कार्यकाल पूरा किया। यह गठबंधन सरकार गठबंधन सरकारों से भिन्न थी क्योंकि यह गठबंधन चुनाव पूर्व किया गया था। गठबंधन की संस्कृति विकसित अवस्था की ओर अग्रसर थी। सरकार ने समस्त क्षेत्रों मे अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की, चाहे वह राष्ट्रीय फलक हो या अंतरराष्ट्रीय। बाजपेई जी गठबंधन धर्म का इमानदारी पूर्वक पालन करते हुए गठबंधन की राजनीति के महत्व की समझ विकसित कर लिए थे,

चुनाव पूर्व भाजपा नीत 'राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' की अभूतपूर्व सफलता से प्रभावित कांग्रेस पार्टी ने 'एकला चलो' की राह त्याग कर गठबंधन की राजनीति का अनुसरण किया। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने अपनी उपलब्धि पर अति विश्वास होकर समय पूर्व ही चुनाव कराने का निर्णय लिया, जो उसकी भयंकर भूल साबित हुई। चुनाव परिणाम आश्चर्यचकित करने वाले रहे। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को आशान्वित सफलता नहीं मिली, जो कांग्रेस समर्थित सहयोगी संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन 2004 को मिली। 'संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन'' राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन' से 7 सीटें अधिक प्राप्त कर मनमोहन सिंह के नेतृत्व में सरकार बनाने में सफल रही। इस गठबंधन में वामपंथी दलों ने बाहरी समर्थन देना स्वीकार किया। जिसने प्रारंभ से ही विभिन्न मुद्दों को लेकर सरकार पर दबाव बनाते रहे। येन–केन प्रकारेण यह अपने कार्यकाल को पूरा करने में सफल रही। पंद्रहवीं लोकसभा आम चुनाव 2009 में जनादेश पुनः गठबंधन सरकार के पक्ष में आया और कॉन्ग्रेस नीत संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार की वापसी हुई। यूपीए के दूसरे कार्यकाल में कांग्रेसी सरकार का नेतृत्व कर रही थी जो स्वाधीन भारत के अब तक के सबसे बड़े घोटाले में उलझी रही। प्राप्त जनादेश को कांग्रेस समर्थित यूपीए गठबंधन सरकार किसी तरह अपने कार्यकाल को पूरा किया।

16वीं लोकसभा चुनाव 2014 के उपरांत भारतीय राजनीति एक नूतन रूप में परिलक्षित हुई। पूर्व चुनावों में प्राप्त जनादेश से यह आम धारणा बन चुकी थी कि अब भारतीय राजनीति में किसी भी राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त कर सरकार बनाना कठिन होगा, किंतु भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में गठबंधन की राजनीति झंझावातों से मुक्त होकर सरकार का गठन किया और सफलतापूर्वक अपने कार्यकाल को पूर्ण किया।

17वीं लोकसभा के आम चुनाव 2019 में पुनः जनादेश राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को प्राप्त हुआ जिसमें भाजपा ' सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के नारों से जनता को अभिभूत करते हुए स्वयं अस्थाई सरकार बनाने में सक्षम हुई। वर्तमान में जनादेश एक बार फिर मोदी सरकार पर विश्वास करते हुए देश की बागडोर नरेंद्र मोदी जी के हाथों में सौंप दिया गया।

1990 के दशक में राजनीतिक संघवाद और आर्थिक उदारीकरण के मामले में भारतीय राजनीति व्यवस्था में जो परिवर्तन हुआ है, उनका महत्वपूर्ण पहलू 1989 से दिल्ली में मौजूद गठबंधन सरकार और अल्पमत सरकारे भी है। 1989 तक कांग्रेसके लंबे प्रभुत्व के बाद केंद्र में गठबंधन और अल्पमत की सरकारे दिखी। हालांकि केंद्र में गठबंधन सरकार बनाना 1989 में शुरू हो गया था और उनके बाद से ही जारी रहा, लेकिन केंद्र में सत्तारूढ़ जनता पार्टी (1977–79) भी एक तरह से गठबंधन ही थी।1989 से 1999 के दशक में कई अस्थिर गठबंधन और अल्पमत सरकारे दिखी,जो एक के बाद एक आती रही।भारत में गठबंधन और अल्पमत सरकारें संसदीय व्यवस्था की उस नाकामी का नतीजा है, जिसके तहत वह सरकार बनाने के लिए निचले सदन लोकसभा में पूर्ण बहुमत हासिल करने के पैमाने पर खरी नहीं उतर पाती है। 1989 के बाद से कोई भी पार्टी सदन में बहुमत हासिल नहीं कर पाई है। केवल 2014/282एवं 2019/303 सीटें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) हासिल कर पाई 2014 एवं 2019 में के चुनावों में भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की।

निष्कर्ष

भारत में धीरे–धीरे गठबंधन की राजनीति की संस्कृति परिपक्व होती दिख रही है। यहां व्यक्ति के स्थान पर विचारधारा को प्रोत्साहित कर प्रतिष्ठित करना होगा। गठबंधन की राजनीति में दोष ढूंढने के बजाय इस में आई हुई विकृतियों को दूर करना होगा। राजनीतिक दलों को विवेकशीलता,कर्तव्यनिष्ठा, परिपक्वता, नैतिकता एवं इमानदारी के गुणों के संग राजनीतिक शुचिता, प्ररदर्शिता एवं नैतिक मूल्यों की पुनः स्थापना करनी होगी। राजनीतिक दलों को व्यक्तिगत हित को त्याग कर राष्ट्रीय हित को प्रमुखता देकर भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति में अस्थाई एवं अमजबूत सरकार के स्थान पर स्थाई और मजबूत सरकार के निर्माण हेतु प्रयत्न करना होगा जिससे भविष्य में सशक्त भारत का निर्माण किया जा सके। वर्तमान में गठबंधन की राजनीति अभी भी जारी है। हालांकि इसके स्वरूप में परिवर्तन हुआ है राष्ट्रीय फलक पर 90 का वह दौर नहीं रहा जब राष्ट्रीय सरकारें गठबंधन की राजनीति में बनती बिगड़ती थी। विगत दो आम चुनावों (2014 एवं 2019) में जनता ने एक राष्ट्रीय दल को सशक्त जनादेश देकर यह संदेश दे दिया है कि देश के विकास के लिए स्थाई सरकार का होना आवश्यक है। तथापि चुनाव पूर्व

राष्ट्रीय व क्षेत्रीय दलों के बीच हुए गठबंधन से यह बात सिद्ध होती है कि निषेधात्मक ही सही, सत्ता प्राप्ति हेतु गठबंधन की राजनीति जारी रहेगी। भारतीय राजनीति की यह विडंबना है कि दो अलग विचारधारा वाली पार्टियां भी एक साथ आने से गुरेज नहीं करती चाहे वह बंगाल में कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टी की बात हो या बिहार में महागठबंधन के जदयू राजद की। 2019 के आम चुनाव में उत्तर प्रदेश में सपा–बसपा गले मिल गए। यह अवसरवादी राजनीति की प्रकाश ही थी। तथापि हमें इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि देश की राजनीति गठबंधन के ऐसे दौर में पहुंच गई है, जहां से इसकी वापसी आने वाले कुछ दशकों में संभव नहीं लगती। यही नहीं प्रत्येक निर्वाचन के पश्चात केंद्र और राज्य में गठबंधन की राजनीति और भी जटिल होती जाएगी। इसलिए इस जटिलता को भगाने के बजाय यदि हम इसको चुनौतियों को स्वीकार करें, तो देश के लोकतंत्र को ज्यादा मजबूती प्रदान किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डा. फारिया बी. एल. एवं डॉ. कुलदीप फारिया, भारतीय शासन एवं राजनीतिक, साहित्य भवन, आगरा, 2019 पृ–691
2. वही
3. देखें इंडिया टुडे, मोदीमय भारत,विशेषांक, 5 जून 2019
4. अटल बिहारी वाजपेई,गठबंधन की राजनीति, संपादक डॉ. ना.भा. हटाटे, प्रभाव प्रकाश, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2004, पृ.11
5. डी. सी. गुप्ता,भारतीय शासन व्यवस्था एवं राजनीति, विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,1972, पृ.435–437
6. अमर उजाला – 24 मई,2019
7. भारतीय निर्वाचन आयोग
8. गठबंधन की सरकारें एवं राष्ट्रपति की भूमिकाः ओम प्रकाश पवार।
9. बिहार के संदर्भ में गठबंधन सरकार एवं प्रशासन नेः कुमारी सरोज एवं अनिल कुमार ओझा
10. एम लक्ष्मीकांत–भारत की राजव्यवस्था–माइक्रो हिल एजुकेशन लि. न्यू दिल्ली–2014,पृ.645
11. शर्मा हरिश्चंद्र–भारत में राज्यों की राजनीति, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर 986–87,पृ.–362